तर्ज-ए मेरे प्यारे वतन ए मेरे बिछुड़े चमन

अर्ज करती है दुल्हन,पकड़ कर धनी के चरण
सुन लो मेहरबान
खुद को भूली है जो रूह,उसका है बस तूं ही तूं
तुझ पे रूह कुरबान

1- मेहर के सागर धनी,मैं लहर हूं आपकी
इश्क देखा आपका,जानी साहेबी आपकी
अब तो है बस ये लगन,देखूं अपना मूल तन
है बका में जहां,खुद को...

2- सारे अंगो से धनी,आपकी सेवा करूं
आप दुल्हा मैं दुल्हन,वचन ये दृढ़ करके कहूं
रब्द को करके दफ़न,तोड़ दो झूठा सुपन
अंग लगे अंगना,खुद को...

3- कुछ तेरी अर्जी करें,कुछ फना में गर्क है
कुछ का मन चलने को है,कुछ के मन में तर्क है
खेल कैसे हो खत्म,सोच कर आखें हैं नम
साथ है हैरान,खुद को....

Nijanand App